द्वितीय अध्याय

रेवतीसरन शर्मा के नाटकों में चरित्र – चित्रण

दृवितीय अध्याय

"रेवतीसरन शर्मा के नाटकों में चरित्र-चित्रण"

प्रस्तावना -

साहित्य के सभी अंगों में नाटक ही एक ऐसा अंग है, जिसका जन-जीवन से सीधा-संबंध है । काव्य, उपन्यास, कहानी आदि साहित्य की विधाओं का आस्वादन एक व्यक्ति या कुछ ही व्यक्ति एक साथ कर पाते हैं। परंतु नाटक का आनंद एक साथ अधिक से अधिक व्यक्ति कर सकते हैं।

नाटक में पात्रों का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। नाटककार नाटक में कई पात्रों का निर्माण करता है । इन पात्रों में एक प्रमुख पात्र होता है, जिसके इर्द-गिर्द नाटक का सभी कार्य व्यापार भटकता रहता है और अंतिम फल की प्राप्ति उसी को होती है, वही नाटक का नायक कहा जाता है। नाटककार के उद्देश्यों को सही तथा प्रभावी ढंग से पाठकों के सामने रखने का काम विभिन्न पात्र ही करते हैं। नाटक को रंगमंचपर प्रसारित करते समय पात्र अपना अभिनय, अपनी हर क्रिया, बोलचाल परस्पर व्यवहार, रहन-सहन सबकुछ नाटककार के इच्छा के अनुसार करते हैं। नाटककार अपने विशिष्ट उद्देश्यों के अनुसार विशिष्ट पात्रों को अपने नाटक की कथावस्तु द्वारा प्रस्तुत करता है।

अगर नाटककार का उद्देश्य पुराणकालीन होगा तो वह पुरानकालीन अमानवीय अवतारों को अपने नाटक में पात्रों के रूप में प्रस्तुत करेगा। अगर उद्देश्य ऐतिहासिक होगा तो वह इतिहासकालीन विभिन्न राजाओं का वह पात्रों के रूप में प्रस्तुत करेगा। नाटककार अपने उद्देश्यों के अनुसार उचित पात्रों को विविध रूपों में प्रस्तुत करता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि नाटककार अपने विशिष्ट उद्देश्यों के अनुसार उचित पात्रों को कल्पनाओं के माध्यम से निर्माण करता है, या प्रत्यक्ष जीवन में मिलनेवाले पात्रों को स्वीकारता है। पात्र कोई भी हो, किस भी काल का हो वह विशिष्ट उद्देश्यों के अनुसार ही अपना व्यवहार करता है।

पात्रों के संबंध में नाटककार जगदिशचंद्र माथूर जी लिखते हैं- ''हरेक नाटककार को अपने अनुभव के दायरे में से समस्याएँ और परिस्थितियाँ बेचैन करती हैं, और उन्हें उजागर करने के लिए वह पात्र और प्रसंग योजना है। उन्हें ही वह मंच की परिधियों में बैठाता हैं।''[1]

इससे स्पष्ट होता है कि नाटककार अपने पात्रों के चरित्र अपने विशिष्ट उद्देश्यों के अनुसार ही बनता है। इसके लिए कभी वह कल्पना ही सहायता लेता है, कभी वास्तविकता की।

2.1 चिराग़ की लौं -

पात्र एवं एवं चरित्र-चित्रण की दृष्टि से 'चिराग़ की लौं' नाटक अत्यंत सुंदर है। वर्तमान युग में आदर्श मूल्यों को लेकर जीनेवाला व्यक्ति व्यावहारिक जीवन में सफल नहीं हो सकता।

'चिराग़ की लौं' नाटक का प्रमुख पात्र किशोर है। अन्य महत्त्वपूर्ण पात्रों में तारा, रानी, नसीम, जयंत, तथा गिरीश आदि हैं। इस नाटक में कुल-मिलाकर सत्रह पात्र हैं। जिस में बारह पुरूष पात्र और पाँच स्त्री पात्र है। सशक्त चरित्र-चित्रण की दृष्टि से किशोर, तारा, रानी, नसीम, जयंत तथा गिरीश महत्त्वपूर्ण पात्र है।

2.1.1 किशोर -

' चिराग़ की लौं' नाटक आदर्शवादी और नायक प्रधान है। उसके चरित्र की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

2.1.1.1 आदर्शवादी

2.1.1.2 ईमानदार

2.1.1.3 कर्मठ

2.1.1.4 जनता के प्रति आस्था

2.1.1.5 दायित्व का निर्वाह

2.1.1.6 बनावट और दिखावे से दूर

2.1.1.7 आत्मपीड़ित

2.1.1.8 'चिराग़ की लौं'

2.1.1.1 आदर्शवादी -

किशोर के विचार आदर्शवादी हैं। " आदर्शवादी नायक मानवीय मूल्यों के प्रति अत्याधिक सजग होता है। ये मानवीय मूल्ये ही जो किसी भी समाज और राष्ट्र को भावात्मक एकता मे बाँधते हैं, और सामाजिक, राष्ट्रीय प्रगति एवं उन्नति का मार्ग प्रशस्त करते हैं।"[2] प्रस्तुत नाटक का नायक किशोर समाज में फैले भ्रष्टाचार का उन्मुलन करते हुए नैतिकता की स्थापना करना चाहता है। वह भौतिक वैभव के शोर-शराब से बहुत दूर है। उसकी पत्नी तारा जब उसके आदर्शों से नफ़रत करते हुए भ्रष्टाचार के रंग में रंग जाती है, तब वह अपनी पत्नी का साहचर्य छोड़ देता है। लेकिन अपने सिधान्तो आदर्श मूल्यों का त्याग नहीं करता। किशोर, आदर्श विचारानुसार मानवतावादी भूमिका निभाते हुए अपने कार्य क्षेत्र में सफल होता है। इस अर्थ में वह सफल है कि रिश्वत और लालच के जाल में कभी अटकता नहीं। अपने परिवार को सीमित क्यों न रहो, भ्रष्टता से दूर रखने का जी जान से प्रयास करता है। किशोर के इसप्रकार के आचरण से औरों के मन में भी आदर्श जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठापना करने की इच्छा पल्लवित हो।

किशोर की पत्नी तारा का जीवन-विषयक दृष्टिकोन मतलबी है। उसका विचार है कि रिश्वत तो सारी दुनिया लेती है और हम दुनिया से अलग नहीं रह सकते। अर्थात वह किशोर को रिश्वत लेने के लिए कहती है। इसी समय किशोर का यह कहना है कि -" अगर शहर में ताऊन फैल जाए, तो क्या हर आदमी अपनी गिलटी निकाल ले? अगर एक ईमान बेचता हो तो क्या हर आदमी के लिए ज़रूरी है कि वह भी अपने ईमान को बाजार में ला रखे? "[3] अतः स्पष्ट है कि किशोर एक आदर्श पात्र है। वह अपने जीवन में केवल आदर्श की पुँजी लेकर ही चलता है।

2.1.1.2 ईमानदार -

किशोर अपने कर्तव्य के प्रति पूर्ण ईमानदार है। जो भी चोर-बाजारी करते हुए पकड़े जाते हैं, उनके बहीखातों को रात-दिन जाँचता है, और उन पर कड़ी कार्यवाही करता है। वर्तमान भौतिकवादी युग में गिरीश मुखर्तः साबित करता है। स्वार्थ की अंधी दौड़ में प्रत्येक व्यक्ति अनैतिकता से धन आर्जित करता है। लेकिन, किशोर ऐसे स्वार्थांध लोगों के सामने सेठ भोगीलाल तथा जयंतद्‌वारा दी गई रिश्वत ठुकराकर ईमानदारी का आदर्श प्रस्तुत करता है। जयंत के कथन से स्पष्ट होता है कि किशोर कभी भी रिश्वत के जाल में उलझता नहीं। किशोर के ईमानदारी पर जयंत और गिरीश की बात-चीत प्रकाश डालती है:-

''जयंत - अरे,मैने अपने ऊपर डालकर पूछा कि मुझे भी नहीं बख्शोगे, तो ऐसे इनकार कर गया कि मैं देखता रह गया ।

गिरीश - यह तो मैने देखा । परोंपर पानी नहीं टिकने देता था ।

जयंत - तू टिकने की बात करता है, वह गिरने नहीं देता था ।''[4]

अर्थात किशोर ईमानदारी को निभाने में अपना पराया ऐसा कोई भेद नहीं करता । जयंत उसका दोस्त होते हुए भी किशोर उसे बचाता नहीं बल्कि अपना फर्ज ईमानदारी से पालन करते हुए उससे टैक्स वसूल करता है । जिन रिश्तों से मतलब की गंदगी आती है, उससे उसे कोई लगाव नहीं है ।

2.1.1.3 कर्मठ -

किशोर का व्यक्तित्व कर्मठता से युक्त है । वह अपने दफ्तर का काम पूरी लगन से करता है । केवल दफ्तर में ही नहीं बल्कि बहीखातों को घर लाकर रात में उसे जाँचता है । वर्तमान युग में ऐसे ईमानदार, कर्मठ, अफ़सरों का अकाल-सा पड़ गया है । मेहनत करने की अपेक्षा बहुतसे अफ़सर रिश्वत लेकर केस छोड़ देते हैं । लेकिन किशोर ऐसे नहीं करता । किशोर को रात-दिन मेहनत करने में आत्मिक परितोष मिलता है । किशोर जयंत द्‌वारा आयोजित पार्टी में न आने की वजह बताते हुए कहता है :

"किशोर - क्या बताऊँ ! ज्यादातर बहीखाते घर लाने पड़ते हैं । रात ही को देखता हूँ ।

जयंत - रात को देखते हैं ? (उसकी आँखों में आँखे डालकर) आप को रातोंपर रहम नहीं आता ?

किशोर - रात के इस्तेमाल से अगर दिन का उजियारा कुछ ज्यादा हो जाए, तो मुझे रात गँवाने का ग़म नहीं होता ।" [5]

इस तरह किशोर का व्यक्तित्व कर्मठता से युक्त है । आज सरकारी दफ्तरों में चल रही भ्रष्टाचार को नष्ट करने के लिए किशोर जैसे ईमानदार और कर्मठ अफ़सरों की आवश्यकता हैं ।

2.1.1.4 जनता के प्रति आस्था -

प्रस्तुत नाटक में किशोर का एक श्रेष्ठ विचारक रूप प्रकट हुआ है । किशोर के दिल में सामान्य जनता के प्रति आस्थाभाव है । सामान्य जनता के प्रति आस्थाभाव होने के कारण किशोर उनकी समस्याओं तथा दयनीय स्थिति के बारे में सोचता है । और उसे सुलझाने की दृष्टि से आचरण करता है । रिश्वत लेना किशोर को अच्छा नहीं लगता । इस लिए जब उसकी पत्नी तारा उसे रिश्वत लेने को कहती है - तब वह तारा को समझाते हुए कहता है -"जानती हो, रिश्वत लेकर केस छोड़ देने से क्या होगा ? लोग और बेधड़क होकर ब्लैक करेंगे । चीज़ें और महंगी हो जायेंगी । जीवन और कठिन हो जायेगा । रिश्वत लेकर हम उल्टे अपने-आप से दुश्मनी करेंगे ।"[6] इसप्रकार रिश्वत लेना किशोर को स्वयम् से दुश्मनी लगती है ।

किशोर के विचार मानवतावादी है । वह समाज में फैल रहे भ्रष्टाचार को समाप्त करने की हर संभव कोशिश करता है । दूसरों का शोषण करके आराम का जीवन जीना उसे कतई पसंद नहीं है । दूसरों की हँसी - खुशीपर जीनेवालों से वह नफ़रत करता है । इसके संबंध में वह तारा से कहता है "मुझे सिर्फ उस आदमी से नफ़रत है जो दूसरों की हँसी-खुशीपर जीता है ।" [7]

इस प्रकार किशोर के विचार आदर्शवादी है । उसके दिल में जनता के प्रति आस्था है । यह उसके मानवतावादी विचारों को ही दिखाती हैं ।

2.1.1.5 दायित्व का निर्वाह -

पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाना किशोर अपना फर्ज समझता है । पारिवारिक विघटन के इस युग में भी किशोर परिवार के सारे सदस्यों की देखभाल करता है । आर्थिक स्थिति कमजोर हाते हुए भी किशोर अपनी बहन कांता के लिए सौ रूपये और पिताजी के आँख के आपरेशन के लिए कुछ रूपये भेजने का प्रयास करता है । उसके अन्य भाई गरीब होने के कारण घर पैसे नहीं भेज सकते । इसलिए परिवार की पूरी जिम्मेदारी किशोर को ही उठानी पड़ती है । अपनी आर्थिक स्थिति ठीक न होते हुए भी किशोर अपनी जिम्मेदारी ईमानदारी से निभाता है । मगर उसकी पत्नी तारा किशोर को घर रूपये भेजने का विरोध करती है ।

तारा का कहना है कि किशोर के अन्य भाई होते हुए हम ही घर पैसे क्यों भेजे ? उनके और बेटे नहीं है, तब किशोर तारा को समझाते हुए कहता है -

''किशोर - कांता के लड़का हुआ है । कपड़े देने होंगे ... सौ रूपये मँगाये हैं ।

तारा - आखिर हम ही घर रूपये क्यों भेजे ... और बेटे नहीं हैं ?

किशोर - वे गरीब हैं ... ।'' [8]

वर्तमान युग में संयुक्त परिवार की संकल्पना नष्टप्राय हो गयी है । जो व्यक्ति आर्थिक दुरावस्था के समय परिवारवालों की सहायता की अपेक्षा रखता है, वो ही आय के साधन मिलने पर उनसे दूर चला जाता है । तारा किशोर को यह सलाह देती है कि आखिर हम ही घर रूपये क्यों भेजे लेकिन किशोर मानवतावादी और सहृदय होने के कारण परिवार की जिम्मेदारियों को निभाता हैं ।

2.1.1.6 बनावट और दिखावे से दूर -

किशोर फॅशन-परस्ती से दूर, सादा जीवन और ऊँचे विचारोंवाला व्यक्ति हैं । किशोर का अपना खयाल है कि मनुष्य की सुंदरता कीमती कोट, टाय तथा शालों में नहीं हैं, तो उसके विचारों और आचरण में है । आज फॅशन परस्ती के जमाने में लेटेस्ट कीमतीं चीजें खरीदना उच्चवर्गीय लोगों की अमीरी दिखाने का

बन गया हैं । उनकी सभ्यता टाय और कोटों में छिपी हुई हैं । ऊपर से सभ्य दिखायी देनेवाले क़ीमती कोट और शालो के नीचे कितनी विद्रुपता है, यह किशोर अच्छी तरह जानता है । अतः किशोर झूठी प्रतिष्ठा प्राप्त करना नहीं चाहता । वह दिखावे से दूर रहकर बनावटीपन से नफ़रत करता है । रानी, के घर जाते समय तारा, किशोर को कोट और टाय पहनने के लिए कहती है, लेकिन तारा की फॅशन - परस्ती की दृष्टि को झकझोरते हुए कहता है - "मुझे बनावट और दिखावे से ज्यादा कोई चीज़ तकलीफ़ नहीं देती ।" [9]

अतः स्पष्ट है, किशोर न्याय और सत्य की पक्षधर, सादगी भरे जीवन से आस्था रखनेवाला, फॅशन और दिखावे से दूर एक आदर्श पात्र है ।

2.1.1.7 आत्मपीड़ित -

प्रस्तुत नाटक में किशोर का आत्मपीड़ित रूप उभरकर आया है । उसकी आत्मपीड़ा का कारण कभी गरीबी का एहसास, तो कभी अपने आदर्श और सिद्धांत को ठेंस पहुँचना और कभी अपने गैरों से मिलने का दुःख हैं । किशोर की पत्नी तारा एक लखपति की बेटी है, तो किशोर एक मामूली सा दो सौ पचास रूपये कमानेवाला इन्कमटैक्स अफ़सर । अतः वह तारा की चाहतों को सपनों को पूरा नहीं कर सकता । तारा सुख-सुविधाओं से भरा जीवन चाहती है, तो किशोर आदर्श के कारण उसे पूरा नहीं कर सकता । इस विचार वैषम्य के कारण दोनों में झगड़ा होता हैं । ऐसे समय किशोर को अपनी गरीबी के कारण आत्मपीड़ा पहुँचती है । किशोर तारा से कहता है - "शायद नहीं ... (गहरा सांस लेकर) मैं तुम्हारी कोई चाह पूरी नहीं कर सकता, क्योंकि मैं गरीब हूँ । मेरे पास कुछ नहीं हैं ।"[10] उसकी आत्मपीड़ा को हीं दर्शाता है ।

किशोर को इस बात का दुःख होता है कि उसके मना करनेपर भी तारा का रानी के घर आना-जाना बढ़ता है, उसे पूछे बिना वह गिरीश के दफ्तर में नौकरी करती हैं । लेकिन उससे भी ज्यादा दुःख उसे तब होता है, जब उसके जप्त किए कागजात तारा पाँच हजार रूपयों में गिरीश को बेच देती है । तब किशोर कहता है कि, - "मेरी ही बीवी ने मेरी घर में मेरे ईमान को पाँच हजार में बेच डाला ।" [11]

जो किशोर जीवनभर भ्रष्टाचार के खिलाफ संघर्ष करता रहा, जिसके कारण उसे इस व्यवहारी दुनिया में दर-दर की ठोंकरे खानी पड़ी । उसे अपनी पत्नी का गैरों के साथ भ्रष्टाचार करते हुए देखना उसके जीवन

की विड़ंबना है । जिसके प्यार के सहारे वह जिंदगी काट रहा था, अगर वो ही धोखा दे, तो उससे ज्यादा पीड़ादायक और क्या हो सकता है । तारा के इस धोखा दड़ीपूर्ण व्यवहार से पीड़ित किशोर कहता है, - ''मैं ज़िंदगी में बस ईमान और आदर्श की पूँजी लेकर चला था । मैंने बस तुम्हारी मुहब्बत का चिराग़ जलाकर चोरों की इस दुनिया में रात काटनी चाही थी । लेकिन तुम चोरों से मिल गई । तुमने चिराग़ बुझा दिया । मुझे अँधेरे के रहम - ओ - करम पर छोड़ दिया ।''[12] अतः स्पष्ट है, किशोर कीं जीवन आत्मपीड़ा से युक्त है ।

2.1.1.8 'चिराग़ की लौं -

किशोर अँधेरे के सीने में दागती हुयी 'चिराग़ की लौ' हैं । तारा, जीतकर भी हार जाती है ओर किशोर हारकर भी जीत जाता है । तात्पर्य यह है कि व्यवहारिक जीवन में सफल होते हुए भी जिस प्रेम की रक्षा के लिए तारा ने व्यवहारी दृष्टि को अपनाया था, भ्रष्टाचार किया था उस प्यार को पाने में वह असफल हो जाती है । लेकिन किशोर व्यवहारी दुनिया में असफल होते हुए भी अपने सिद्‌धांत और आदर्श की रक्षा करने में सफल होता हैं । आदर्श और सिद्‌धांतों की रक्षा के लिए किशोर अपनी पत्नी का साहचर्य छोड़ देता है और उस भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने का निश्चय करता है, जो सामान्य जनता के जीवन में अँधेरा फैलाता है । वह कहता है कि - ''मैं हारूँगा नहीं, क्योंकि मैं, मैं नहीं हूँ ... मैं अँधेरे के सीने में दागती हुई [redacted] चिराग़ की लौ हूँ ।''[13]

प्रस्तुत नाटक का नायक किशोर है । नाटक का आरंभ और अंत किशोर के संवाद से होता है । किशोर आदर्शवादी, ईमानदार, सुहृदय, मानवतावादी, सामान्य जनता के प्रति आस्था रखनेवाला फॅशन परस्ती से नफ़रत करनेवाला, अपने गैरों से मिलने के कारण आत्मपीड़ित, तथा अँधेरे के सीने में दागती हुई चिराग़ की लौ हैं । किशोर आदर्श और नैतिकतापूर्ण आचरण करनेवाला इन्कमटॅक्स अफ़सर है । स्पष्ट है की किशोर के चरित्र चित्रण में लेखक को काफी सफलता मिली है ।

इस नाटक का नायक किशोर'चिराग़' का प्रतिक है और उसकी ईमानदारी'लौं'का प्रतिक है । किशोर अपनी ईमानदारी रूपी 'लौ' से भ्रष्टाचार रूपी अंधःकार को मिटाने का प्रयत्न करता है । किशोर भ्रष्टाचार का विरोधी है । जयंत, गिरीश और रानी तारा को बहकाते हैं । उसे रिश्वत लेने को प्रवृत्त करके किशोर की ईमानदारी मिटाना चाहते हैं । तारा किशोर की पत्नी है, फिर भी धन की लालच और ऐशो-आरम की जिंदगी के

लिए पती की ईमानदारी को मिटाने में साथ देती हैं । लेकिन किशोर की ईमानदारी की लौं ऐसे हवा के झोंकों से बुझनेवाली नहीं । वह तो तूफान में भी न मिटनेवाली थी ।

इस प्रकार किशोर चिराग़ का प्रतीक है, तो उसकी ईमानदारी चिराग़ की लौ का प्रतीक है ।

2.1.2 नारी पात्र -तारा -

प्रस्तुत नाटक में स्त्री पात्रों में तारा का अंतर्भाव किया जाता है । तारा एक लखपति की बेटी होते हुए भी मामूली इन्कमटैक्स अफ़सर किशोर से अपने प्यार के खातिर विवाह करती है । लेकिन तारा का आदर्श प्रेम अभावग्रस्त जीवन से समझौता न कर सका । तारा अपनी बचपन की सहेली रानी की तरह 'मॉडर्न लाइफ' जीना चाहती है । लेकिन यह चाहत किशोर के आदर्श और ईमानदारी के कारण चाहत ही बनी रहती है । तारा किशोर को उत्कोच का मार्ग अख्तियार करने को कहती है । तारा के शब्दो में ''मुझसे अब तरस-तरस कर नहीं जिया जाता । मुझे तुम्हारे खयाल नहीं चाहिए, आदर्श नही चाहिए । मुझे जीवन चाहिए जो आराम रूपये और रेशम के लिए तरसते-तरसते ऐसा बेरंग, बेरूप न हो जाए जैसे मैं । ''[14]

तारा, रानी के बहकावे में आकर स्वतंत्र व्यक्तित्व बनाना चाहती है । अपना 'करियर' विकसित करने के लिए रानी के साथ बड़ी-बड़ी पार्टियों, कार्यक्रमों में जाने लगती है । आर्थिक समस्या को सुलझाने के लिए गिरीश के दफ्तर में नौकरी करती है । किशोर के विचार सुख-चैन की अपेक्षा तारा को उसकी प्रतिष्ठा महत्वपूर्ण लगती है ।

पिताजी की आँख के आपरेशन के लिए बँक में रखे पैसों को तारा कीमती कोट, शाल और साड़ियाँ खरीदने में उड़ाती है । वह यह नहीं सोचती कि उसके इस प्रकार के आचरण का किशोर पर क्या आघात होगा । किशोर के पूछनेपर वह कहती है कि - '' मुझे कोट चाहिए था । उन लोगों के साथ मैं तीस रूपये के शालों और पचास - साठ के कोटों में नहीं घूम सकती .... मैं अपनी हल्की नहीं करा सकती ।''[15] अतः स्पष्ट है कि तारा प्रेम की अपेक्षा झूठी प्रतिष्ठा को अधिक महत्व देती है ।

तारा भ्रष्टाचार के पैसों से घर का कायाकल्प कर देती है । किशोर के पूछने पर वह कहती है कि - ''मैंने बस तुम्हारे लिए अपने उस प्यार को बचाने की कोशिश की है, जिसे आए दिन की तंगी और वे झगड़े खत्म कर रहे थे । जिनकी तह में हमेशा रूपये के रोने होते थे । अब वे झगड़े नहीं होंगे । ''[16] यहाँ नाटककार ने तारा की मानसिकता को दिखाया है । निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि तारा का प्रेम आदर्श न होकर झूठा है । वह नैतिकता की अपेक्षा अनैतिक कार्य करके भौतिक सुख सुविधाओं को प्राप्त करती है । आदर्श प्रेम की उपेक्षा करके झूठी प्रतिष्ठा के पीछे दौड़नेवाली तारा आधुनिक मध्यवर्गीय युवती का प्रतिनिधित्व करती है ।

2.1.3 रानी -

इस नाटक का दूसरा महत्वपूर्ण पात्र है - रानी, मिल मिलिक जयंत की पत्नी है वह हर चि बलबूते पर प्राप्त करना चाहती है । वह चक्रवर्ती को पैसे देकर ही अपने डांस के उपर आर्टिकल्स छपवाती है । पैसों के सहारे ही वह अपना नाम रौशन करना चाहती है । वह तारा को यह दिखाने का प्रयास करती है कि उसने कितना 'करियर' बनाया है । वह तारा को बताती है कि '' मैंने भरत नाट्यम सीखा है । अगले वीक के लाइट ऑफ एशिया में मेरे ऊपर एक आर्टिकल निकल रहा है, फोटोज के साथ ।''[17] रानी, विकृत मनोवृत्ति का प्रतिक है । वह हमेशा झूठी प्रतिष्ठा प्राप्त करने में मशगुल रहती है । वह तारा को बताती है कि ''पिछले दिनों प्रेसिड़ेण्ट ने विजिट किया । मेरे साथ उनका फ़ोटो यह है ।''[18] रानी का इसी तरह का वर्तन उसके विकृत मनोवृत्ति को ही दिखाता है ।

रानी, तारा की बचपन की सहेली है । अपने दोस्ती के खातिर तारा को अनेक कीमती वस्तुएँ भेट करती है । लेकिन उस में उसका स्वार्थ ही निहित है । वह तारा को गिरीश के जाल में फँसाकर अपना टैक्स का उल्लू सीधा करना चाहती है । उसके लक्ष्यहीन जीवन का अथ और इति ऐश्वर्य भोगने में है । और यही सलाह वह तारा को भी देती है - ''अरे इसीलिए तो कहती थी कि घर की इस खोल से निकल और दुनिया देख । जब से मेरे साथ जाने लगी है, लेटेस्ट डिज़ाइन के कपड़े पहनने लगी है, क्या स्मार्ट शक्ल निकल आयी है ।''[19] रानी उस नारी का प्रतिनिधित्व करती है, जिसके जीवन का अंतिम लक्ष्य अधिकाधिक धन अर्जित करना है । चाहे वह किन्ही तरीके से किया जाए । उसके मन में हमेशा विलासी जीवन जीने की उत्कठ लालसा रहती है ।

2.1.4 नसीम -

नसीम भी किशोर की भाँति नेक और ईमानदार इन्सान है । वह अपने मित्र किशोर के आदर्शवादी चरित्र का कायल है । अपनी ईमानदारी और स्वाभिमान की रक्षा के लिए वह इन्कमटैक्स अफ़सरी का इस्तीफा देता है । नसीम और उसकी पत्नी में अपने निजी सिद्धांत और ईमानदारी को बेचकर सुख-सुविधाओं को जुटाने का कोई लालच नहीं है । वह भ्रष्ट और स्वार्थी लोगों से नफ़रत करते हुए कहता है - ''मुझे उन सब आदमियों से नफ़रत है जिनकी आखों मे हविस की आग जलती है, जिनकी साँसों से जलालत और मतलब परस्ती की बू आती है ।'' [20]

नसीम को पैसों से कोई वास्ता नहीं है। वह ईमानदारी और विचार स्वातंत्र्य का हिमायती है। वह 250 रूपये की नौकरी को लात मारकर 200 सौ रूपये की नौकरी स्वीकार करता है, कारण यहाँ उसे विचार स्वातंत्र्य की निर्भिकता होगी। वह तारा से कहता है कि जितना अब मिलता है, उससे - ''अगर सौ रूपये कम मिलें तो मुझे गम न होगा, भाभी । दो वक्त रोटी मिल जाए, जिंदगी अपने उल्टे-सीधे खयालों और ख्वाबों के साथ गुजर जाए, हमें कोई गिला न होगा।''[21] नसीम भौतिक-सुविधाओं के लिए अमिरों की दहलीज का कुत्ता बनना नहीं चाहता। नसीम के जीवन का अंतिम लक्ष्य जनहित या जनकल्याण है। जब जयंत उसे 500 सौ रूपये महीने का आफर देकर आमंत्रित करता है, तब नसीम उसे अस्वीकार करते हुए जबाब देता है कि -''हां, जयंत साहब, आप मुझे पाँच सौ देंगे ज्यादा भी दे देंगे, पर मेरी आवाज --- मेरी आजादी --- मेरी कलम मुझसे ले लेंगे ।''[22] नसीम के विचार स्वातंत्र्य और ईमानदारी की कद्र जिस नौकरी में की जाती है, वहाँ उसे कम पैसे मिलने से कोई गम नहीं होता ।

2.1.5 जयंत -

जयंत 'चिराग की लौ' नाटक का प्रतिनायक है। उसने मिल-मालिक होने के कारण ब्लैक-मर्किट से अपार ऐश्वर्य प्राप्त किया है। जयंत सामान्य जनता तथा मजदूरों का शोषण करनेवाला पूंजीपति है। अपने मिल से तैयार होनेवाले कपड़ों पर ऊँचे दाम छपवाकर बेचता है । साथ ही वह मिल के लिए स्टील के कोटे को ब्लैक-मार्किट में बेचता है। उसका परिचय देते हुए किशोर तारा से कहता है -''वे चोर, लुटेरे और खूनी है,

क्योंकि आज-कल इसके लिए नक़ाब चढ़ाकर पिस्तौल चलाने या छुरा घोंपने की जरूरत नहीं। एक जरा भाव बढ़ाने से लोगों के लाखों सिक्के इनकी तिजोरियों में सिमटे चले आते हैं। एक ज़रा नफ़े के दांत गहरे गड़ा देने से लोगों की रगों का सारा खून उनके चेहरे में उमंगों और ऐयाशियों की सुर्खी भरने लगता है।''[23]

जयंत प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए अतिशय नीच और घटिया कर्म करने में भी हिच-किचाता नहीं। 'नई-दुनिया' का संपादक नसीम जब जयंत के काले-धंधो के सबूत प्राप्त करता है., और उन्हें अखबार में छपवाकर उसके चेहरेपर लगाया हुआ नकली चेहरा उतारकर उसके घिनौने असली रूप को जनता के सामने लाना चाहता है। अतः इस बेइज्जती से बचने के लिए जयंत नसीम के दफ्तर को ही आग लगवाता है। इससे दिखाई देता है कि जयंत एक भ्रष्टाचारी, पाखंडी, घटिया किस्म का आदमी है।

2.6 गिरीश -

'चिराग़ की लौं' नाटक में गिरीश सामाजिक भ्रष्टाचार का प्रतीक है। वह भ्रष्टाचार, रिश्वत और अनैतिकता की प्रवृत्ति को बढ़ावा देनेवाला दलाल है। कमीशन लेकर वह गैरकानूनी काम करता है। गिरीश हर हप्ते में एक बड़ी पार्टी का आयोजन करके उस में बड़े-बड़े अफसरों को निमंत्रित करता है। पार्टी में अपने संबंधों को अधिक दृढ बनाता है। और दफ्तर में जाकर गैर कानूनी काम करवाता है। ऐसे काम करने के लिए उसने एक ऑफ़िस खोल रखा है, जहाँ केवल औरतों को ही नौकरी दी जाती है।

गिरीश, जयंत और सेठ भोगीलाल को इन्कमटैक्स से बचाने के लिए इन्कमटैक्स अफ़सर किशोर की पत्नी तारा को अपने जाल में फँसाता है। वह तारा के सामने एश्वर्यपूर्ण जीवन के स्वप्निल चित्र खीचता है। गिरीश किशोर की ईमानदारीपर व्यंग करते हुए तारा से कहता है-''तारादेवी जिंदगी का एक ही आदर्श है- ''जियो और जीने दो- लिव एण्ड लेट लिव।'' यह भी क्या कि न खुद जीते हो, न दूसरे को जीने देते हो । अरे, घाटपर बैठे हो तो अपना किराया लो। लोगों की किश्तियाँ क्यों रोकते हो? ''[24] अतः स्पष्ट है, गिरीश वर्तमान युग में बढ़ती दलाली प्रवृत्ति का प्रतिक है, जो हर चीज़ कमीशन में प्राप्त करना चाहता है।

इसके अलावा प्रस्तुत नाटक में गौण पात्र के अंतर्गत-सेठ भोगीलाल, संपादक चक्रवर्ती, मि.मेहता, मिसेज मेहता, मुनीमजी, सेल्समन, अर्दली, डान्स मास्टर, ड्राइवर गंगाराम, शोफर, बैरा, मॅनेजर

तथा चार मजदूर आदि का अंतर्भाव किया है। इस में सेठ भोगीलाल ब्लैक-मार्किट से आमदानी कमानेवाला व्यापारी है, जो इन्कमटैक्स न देकर सरकार को ठगाने का काम करता है। मि.मेहता इन्कमटैक्स अफ़सर है, जो अपने कर्तव्य से दूर रहकर रिश्वत से धन कमाकर एश्वर्यपूर्ण जिंदगी जीता है। अतः स्पष्ट है पात्र तथा चरित्र-चित्रण की दृष्टि से 'चिराग़ की लौं' नाटक अत्यंत सफल बन पड़ा है।

2.2 अँधेरे का बेटा -

2.2.1 मेजर नारंग -

मनुष्य की मूल यथार्थवादी प्रवृत्ति से सैनिकी जीवन के आदर्श एवं कर्तव्य को त्यागकर अपनी जान बचाने के लिए युद्ध भूमि से भागने के कारण पत्नीद्वारा प्रताड़ित और अपमानित होने के कारण अंत में फिर युद्ध में जाना और युद्ध करते-करते अपने प्राण त्यागकर गौरव का पात्र बननेवाले सैनिक के रूप में मेजर नारंग की पात्र प्रधानता। उनके चरित्र की विशेषताएँ निम्नलिखित है:-

2.2.1.1 सामान्य आदमी की तरह जीने का प्रयास

2.2.1.2 डरपोक

2.2.1.3 असलियत छिपाने का प्रयास

2.2.1.4 गलती का एहसास

2.2.2.5 पत्नी के कारण जीना मुश्किल

2.2.1.1 सामान्य आदमी की तरह जीने का प्रयास -

मेजर नारंग एक मिलिट्री ऑफ़िसर है। युद्ध भूमि में खतरों से खेलते-खेलते मर मिटना और प्रमोशन पर प्रमोशन प्राप्त करना, यही समाज की दृष्टि से सैनिकी जीवन का आदर्श है। मगर मेजर नारंग एक सिपाही होकर भी सामान्य आदमी की तरह जीने का प्रयास करते हैं। मेजर नारंग एक सिपाही होने के नाते उनका

पहला कर्तव्य है कि सामान्य आदमी की तरह अपनी इच्छा - आकांक्षाओं की ओर ध्यान न देकर देश रक्षा करते-करते वीरमरण प्राप्त करना। मगर मेजर नारंग अपने कर्तव्य को भूलकर युद्ध करते समय अपने अन्य साथियों को आगे करके स्वयम् पीछे हट जाते हैं। ताकि वे मर जाए अपनी जान बच जाए।

मेजर नारंग को एक सिपाही होने के नाते ऐसा नहीं करना चाहिए। यदि वे अपने राष्ट्ररक्षण के कर्तव्य से भागकर सामान्य आदमी के रूप में अपने परिवारवालों के साथ सामान्य सुखों का उपभोग करना चाहेगें तो वह उनकी सबसे बड़ी भूल हो सकती है। वे अपने परिवारवालों के साथ सुखपूर्वक जिंदगी जी सकते हैं, मगर इसके लिए उन्हें सिपाही की नौकरी छोड़ देनी चाहिए। यदि ऐसा न करके मेजर नारंग अपने सैनिकी कर्तव्य से जी चुराकर अपने परिवारवालों के साथ सुखपूर्वक जीना चाहेंगें तो मेजर नारंग न राष्ट्ररक्षण के प्रथम कर्तव्य पालन में सफल होंगे न एक कुटुंब कर्ता के रूप में ।

मेजर नारंग युद्ध से भागने की बात पत्नी से छिपाकर रखते हैं। मगर निरूपमा असलियत जान जाती है, तब वह अत्याधिक दुःखी होती है। वह उन्हें पति मानने से इन्कार कर देती है। तब मेजर नारंग उसे कहते हैं -

''नारंग - आदमी ने जहर के प्याले पिए और सूली पर चढ़ा है। फिर भी उसने अपने को बचाना चाहा है।

नीरू - आदमी की नहीं सिपाही की बात करो।

नारंग - सिपाही आदमी नहीं होता।

नीरू - नहीं। सिपाही वचन होता है, कमिटमेंट होता है। वह आम आदमीवाली आजादी नहीं ले सकता।''[25]

इसप्रकार मेजर नारंग एक मिलिट्री ऑफ़िसर होकर भी सामान्य आदमी की तरह जीने का प्रयास करते हैं।

2.2.1.2 डरपोक (बुझदिल) -

मेजर नारंग मिलिट्री में सिपाही होकर भी सामान्य आदमी की तरह जिंदगी जीने का प्रयास करते हैं। व्यक्तिगत सुख दुःख से संबंधित मर्यादित कर्तव्यपर ध्यान देते रहते हैं। इसी प्रकार व्यक्तिगत और मर्यादीत सुख-दुखः के कर्तव्य पर ध्यान देना मेजर नारंग के स्वभाव की बुराई है। जिसे बुझदिली या डरपोक भी कहा जाता है।

मेजर नारंग एक लंबा-तगड़ा मिलिट्री ऑफ़िसर है, मगर उसकी मूल प्रवृत्ति बुझदिली से युद्ध से भागने की है। निरूपमा समझती है कि मेजर नारंग बहादूर और ईमानदार है। इसलिए वह संतोष नामक सहपाठी से प्यार करते हुए भी मेजर नारंग से विवाह कर लेती है। मगर जब असलियत सामने आ जाती है, तब नीरू अत्याधिक दुःखी होती है। वह पति के साथ बात करना भी पसंद नहीं करती। बार -बार उनकी प्रताड़ना करती है। तब वे नीरू से कहते हैंः- "मुझे इस पर इख्तयार न था। शायद इसलिए कि मेरे घर में कोई सिपाही नहीं हुआ ! जान देने पर पीछे न हटने की कोई मिसाल मेरे खून का हिस्सा नहीं बनी ! इसलिए जब मौत ने यकायक मेरी बाँह पकड़ी और होश की सारी बत्तियाँ एकदम बुझ गई, तो उस अँधेरे में मुझे जान बचाने की आरजू ने घसीट लिया। मैं मौत से बाँह छुड़ाकर उसके साथ भाग गया। "[26] इसतरह मेजर नारंग सैनिक होकर भी युद्ध से भागकर आते हैं। जिसके कारण उन्हें बुझदिली का कलंक लग जाता है।

2.2.1.3 असलियत छिपाने का प्रयास -

मेजर नारंग अपने सुपरसेशन की बात अपनी पत्नी निरूपमा से छिपाना चाहते हैं। मगर प्रमोशन के समय उनसे ज्युनिअर मेजर ग्रेवाल का प्रमोशन होता है, और मेजर नारंग का सुपरसेशन इस बात से निरूपमा अत्याधिक दुःखी होती है। उसे लगता है कि उसके पति के साथ धोखा हुआ है., क्यों कि वह असलियत से अपरिचित है।

मेजर नारंग अपना सुपरसेशन होने का कारण पत्नी से छिपाना चाहते हैं, इसीलिए मेजर ग्रेवाल का फोन स्वयम् उठाते हैं। मेजर ग्रेवाल अपने प्रमोशन होने का बात उन्हें फोनपर बताते हैं, मगर यह बात पत्नी से छिपाने के लिए घबराकर जल्दी से फोन रख लेते हैं। जब नीरू उन्हें फोन के बारें में पूछती है तब वे पत्नी से झूठ बोलते हैं -

''नीरू - क्या हुआ?

नारंग - (रूमाल से माथा पोंछते हुए) कुछ नहीं।

नीरू- तुमने मेजर ग्रेवाल को कॉंग्रेच्युलेन्ज दी?

नारंग - हॉ, (झूठ बोल जाता है) उनकी कार का अलाटमेंट आ गया है।''[27] इसप्रकार मेजर नारंग अपने पत्नी से असलियत छिपाना चाहते हैं, मगर दूसरी बार जब मिसेज ग्रेवाल का फोन आता है, तब नीरू स्वयं फोन उठाती है। उसी वक्त मिसेज ग्रेवाल बताती है कि उसके पति का प्रमोशन हुआ है।

2.2.1.4 गलती का एहसास -

मेजर नारंग को अपने गलती का एहसास हुआ है। इसलिए वे अपने को लगा हुआ कलंक धो डालने के लिए हिन्दूस्तान-पाकिस्तान के बीच लड़ाई के लिए जाते हैं। लेकिन युद्ध आरंभ होते ही उनके मन में युद्ध से भागने की बात आती है। वे सोचते हैं -''मुझे बाकी दो प्लाटूनों को निकालकर पीछे हट जाना चाहिए। पीछे हट जाऊँ तो कोई कुछ नहीं कहेगा। सब कहेंगे, मैंने टैक्टिकली ठिक किया। अपने जवानों को बे-मौत मरने से बचा लिया, लेकिन मैं ऐसा करूँगा नहीं। एक-बार करके देख चुका हूँ।''[28]

इस प्रकार मेजर नारंग अपनी जान बचाने के लिए युद्ध से भागने की कोशिश करते हैं। तभी उनके ध्यान में आता है कि वे एक बार वही गलती करके उसकी सजा भुगत चुके हैं। अब उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए । उन्हें अपनी गलती का एहसास होता है और वे युद्ध के लिए आगे बढ़ते हैं, जिस में उनकी मृत्यु होती है।

2.2.1.5 पत्नी के कारण जीना मुश्किल -

मेजर नारंग पत्नी से अत्याधिक डरते हैं। नीरू पति से प्यार करती है लेकिन वह ग्लैमर की कायल है- हर-चीज हेवी मेक-अप में देखना चाहती है । मेजर नारंग जानते हैं कि उनके सुपरसेशन होना नीरू कभी

नहीं कबुल करेगी इसलिए वे अपने सुपरसेशन होने का कारण पत्नी को बताने अलावा उसका सहपाठी संतोष को बताते हैं क्यों कि नीरू सच को पालिश किया हुआ चेहरा मानती है। उन्हें इस बात का डर लगता है कि उनका सुपरसेशन होना नीरू बर्दाश्त नहीं करेगी क्योंकि नीरू चाहती है उसके पति ने हर-एक बात उसकी इच्छा के अनुसार करनी चाहिए। यह सुनकर संतोष दुःखी होकर पूछता है-''

''संतोष - आप बहुत तकलीफ़ में हैं?

नारंग - नीरू ने मेरे लिए जीना मुश्किल बना दिया है।

संतोष - वह आपको प्यार ..... ?

नारंग - नीरू, हर चीज़ को झिल-मिलाता देखना चाहती है। वह हर सुबह मेरे चेहरे पर अपनी पसंद का पाउड्र मल देती है-और चाहती है कि मै-सारे दिन उसकी पसंद के पाउड़र का तकाजा पूरा करता रहूँ।''[29]

इस प्रकार मेजर नारंग एक मिलिट्री आफ़िसर होकर भी सामान्य आदमी की तरह जीने का प्रयास करते, जिसके कारण उन्हें बुझदिल या डरपोक कहा जाता है । असलियत छिपाने का प्रयास करते हैं, कलंकित होने पर गलती का एहसास होता है और पत्नी के कारण जिनका जीना मुश्किल हो जाता है । इस प्रकार पात्र योजना में मेजर नारंग की पात्र प्रधानता सभी दृष्टियों से सार्थक है ।

2.2.2 निरूपमा -

नीरू मेजर नारंग की अपेक्षा उनके सैनिकी जीवन के प्रमोशन-मान-सन्मान और रूतबे को अत्याधिक महत्त्व देती है। वह मिलिट्री जवान के ग्लेमराइज्ड और सैनिकी जीवन के आदर्शवादी रूप को अत्याधिक चाहती है। ऐसी महत्त्वाकांक्षी नारी के रूप में निरूपमा की पात्र प्रधानता दिखाई देती है। उसके चरित्र की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

2.2.2.1 पति के रूप में मिलिट्री ऑफ़िसर की चाह

2.2.2.2 बहादूरी पर नाज

2.2.2.3 हौंसला बढ़ाने का प्रयास

2.2.2.4 पति की अपेक्षा प्रमोशन को अधिक महत्त्व

2.2.2.5 शानदार मौत से खुश

2.2.2.1 पति के रूप में मिलिट्री ऑफ़िसर की चाह -

निरूपमा कॉलेज के दिनों में संतोष नामक सहपाठी से प्यार करती है, मगर उससे शादी नहीं करती क्योंकि उसने पति के रूप में लंबे-तगड़े, स्मार्ट और मौत-जिंदगी से बेपरवाह ऐसे मिलिट्री ऑफ़िसर को चाहा था। जो हमेशा खतरों से खेलता हो और जिसके नाम का ग्लैमर हो। उसके पिताजी ने एक बिज़नेस एक्जीक्यूटिव को लाया था, जो पंद्रह सौ रूपये कमाता था। उससे भी शादी नहीं की। इसके संबंध में वह संतोष को कहती है - " संतोष, तुम मुझे हमेशा अच्छे लगते थे। मुझे राइटर और साहित्यिक टेस्ट के आदमी हमेशा अच्छे लगे हैं । लेकिन पति के रूप में मैने हमेशा मिलिट्री ऑफ़िसर को चाहा ! तुम सोचते होगे मैंने तुमसे इसलिए शादी नहीं की कि तुम कुछ नहीं कमाते थे। मेरे पिता एक बिज़नेस एक्ज़ीक्यूटिव को लाए थे, जो पंद्रह-सौ रूपये कमाता था। मैंने उससे भी शादी नहीं की, क्योंकी मेरे ख्याबों में एक मिलिट्री ऑफ़िसर था- लंबा-तगड़ा, स्मार्ट, मौत-जिंदगी सब से बे-परवाह ।"[30]

मिलिट्री

इस प्रकार निरूपमा संतोष नामक सहपाठी से प्यार करते हुए भी [redacted] ऑफ़िसर मेजर नारंग से विवाह करती है ।

2.2.2.2 बहादूरी पर नाज -

निरूपमा अपनी इच्छा के अनुसार मिलिट्री ऑफ़िसर मेजर नारंग से विवाह करके खुश है । वह अपने पति से प्यार करती है । उन्हें ईमानदार और बहादूर ऑफ़िसर समझकर नाज करती है ।उसे लगता है कि सिपाही ने अधिका-धिक खतरे की जगह होना चाहिए । क्योंकि सिपाही के लिए गौरव का और ऊँचा उठाने का

A
13660

वक्त यही होता है। उसे इस बात पर गर्व है कि उसके पति एक ठोस सिपाही और शानदार अफ़सर है। डर का, हिचका उन में नाम भी नहीं है। वे चीनियों के साथ लड़े हैं। इसप्रकार उनका दांपत्य-जीवन सुखी है। इसके संबंध में वह संतोष को बताती है-"संतोष, मैं बहुत,खुश हूँ। मुझे अपने हसबैंड़ पर नाज़ है। वह एक ठोस सिपाही और शानदार अफ़सर हैं। डर का, हिचक का उन में नाम नहीं ! वे नेफा में गए। चीनियों से लड़े । उन जैसा घुड़सवार, तैराक,पिस्टल शॉट इस स्टेशन पर कोई नहीं। उन्हें बेस्ट शूटिंग के लिए यह ट्राफी मिली है।"[31]

इस प्रकार निरूपमा पति का बहादूरी पर नाज करती है, लेकिन जब वे आदर्श से गिर जाते हैं, तब वह पति से घृणा करती है।

2.2.2.3 हौंसला बढ़ाने का प्रयास -

नीरू जब जान जाती है कि उसके पति का सुपरसेशन हुआ है, तब वह अत्याधिक दुःखी होती है। वह समझती है कि उसके पति हर ऐतबार से काबिल ऑफ़िसर होकर भी मिलिट्रीवालों ने उनके साथ धोखा किया है। अपने हक के लिए वह लड़ना चाहती है, कानून में जाना चाहती है। दिल्ली जाकर अपने पिता के पॉलिटिकल फ्रेंन्ड से मिलना चाहती है।

मेजर नारंग अपना सुपरसेशन होने का कारण जानते हैं, इसलिए वह कही नहीं जाना चाहते। वे नीरू को समझाते हैं कि फौजवालों ने उनके साथ जुल्म नहीं तो इन्साफ किया है। तब नीरू उन्हें कहती है -

"नीरू - नहीं-नहीं। तुम्हारा हौंसला जाता रहा हैं। इस जुल्म ने तुम्हारा कॉन्फीडेंस खत्म कर दिया है। तुम लड़ने की ताकत खो बैठे हो !

नारंग - क्योंकि लड़ना बे-सूद है।

नीरू - लड़ना बे-सूद नहीं है। लड़ना जीत है, हक है। हम अपील करेंगे। मैं दिल्ली जाऊँगी। वहाँ प्रमोद है। पिताजी के पॉलिटिकल फ्रेंड हैं।"[32]

इस प्रकार निरूपमा पति का हौंसला बढ़ाने का प्रयास करती है।

2.2.2.4 पति की अपेक्षा प्रमोशन को अधिक महत्त्व-

निरूपमा पति की अपेक्षा प्रमोशन को अधिक महत्त्व देती है। किसी भी हालत में अपने पति का प्रमोशन चाहती है। प्रमोशन के लिए वह कुछ भी करने को तैयार होती है। जब मेजर नारंग के ज्युनिअर लोगों का प्रमोशन होता है, तब वह अत्याधिक दुःखी होती है। जब मेजर नारंग उसे पूछते हैं कि बिना प्रमोशन के तुम मुझे कबुल नहीं करोगी तब नीरू कहती है-नहीं ''क्योंकि प्रमोशन जीत है, आगे बढ़ना है और सिपाही आगे बढ़ता है।''[33]

जब नीरू असलियत से अपरिचित थी । तब वह समझती थी कि मिलिट्रीवाले लोगों ने उसके पति के साथ धोखा किया है। मगर जब वह असलियत जान जाती है, तब वह पति से कटकर रहने लगती है। जब मेजर नारंग उसे समझाने का प्रयास करते है तब नीरू कहती है-''अब तुम कुछ नहीं कह सकोगे, क्योंकि तुम वह नहीं हो, जो मैंने समझा था ! मुझे राख की बुझती चिनगारी नहीं, युरेनियम का फटता एटम चाहिए था, जो आदमी होता है, हुआ है, होगा!''[34]

इस प्रकार निरूपमा किसी भी हालत में अपने पति का प्रमोशन चाहती है। प्रमोशन के लिए वह झूठ का सहारा लेने को भी तैयार होती है। जब उनका सुपरसेशन होता है तब वह मेजर नारंग से कहती है कि तुम्हारे लिए मेरी जिंदगी में कोई जगह नहीं है इसीलिए तुम जा सकते हो।

2.2.2.5 शानदार मौत से खुश -

वास्तव में किसी भी स्त्री के लिए अपने पति की मृत्यु याने भयंकर सद्मा होती है, लेकिन निरूपमा पति की शानदार मौत से खुश होती है। जब उसके पति मेजर नारंग अपने प्रथम कर्तव्य से जी चुराकर भाग आते हैं। तब नीरू अत्याधिक दुःखी होती है। स्वयम् को मुँह दिखाने के काबिल नहीं समझती। बार-बार पति की प्रताड़ना करती है, तब मेजर नारंग अपने को लगा हुआ कलंक धो डालने के लिए युद्ध करते-करते शहीद होते हैं। यह बात सुनकर निरूपमा दुःखी होती है लेकिन अंतर्मन से खुश होती है। उसे इस बात से संतोष मिलता है कि

अब वह सैनिक विधवाओं से नजरे मिलाकर बात कर सकती है। वह सूरज से आँखे मिला सकती है। इसके संबंध में वह सकीना कहती है-"जानती हो जिस दिन से मुझे मालूम हुआ, उस दिन से मैं तुम से आँखे नहीं मिला पा रही। मेरे लिए सब कुछ खत्म हो गया। लेकिन आज जब वे नहीं रहे, मेरे लिए कुछ नहीं रहा, मुझे लगता है, मैं तुम से आँखे मिला सकती हूँ, सूरज से आँखे मिला सकती हूँ।"[35]

इस प्रकार निरूपमा पति के रूप में मिलिट्री ऑफ़िसर की चाह रहती है । उनकी बहादूरी पर नाज़ करती है । उनका सुपरसेशन होने पर हौंसला बढ़ाने का प्रयास करीती है । पति की अपेक्षा प्रमोशन को अधिक चाहती है और अंत में उनकी शानदार मौत से खुश होती है।

नाटक की पात्र योजना मेजर नारंग और निरूपमा की पात्र प्रधानता दिखायी देती है। इस नाटक में मेजर नारंग,निरूपमा,संतोष, मीरा, सकीना, शबनम, हुजूरासिंह और कर्नल नगायंच आदि चार पुरूष और चार नारी पात्र कुल आठ पात्र हैं।

चीनियों के साथ हुए युद्ध में अपनी जान बचाने के लिए मेजर नारंग युद्ध भूमि से भाग आते हैं। मगर पत्नीद्वारा प्रताड़ित होनेपर पुनः भारत-पाक युद्ध में बहादूरी से लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त करनेवाले मेजर नारंग इस नाटक के प्रधान पुरूष पात्र है। तो सैनिकी जीवन के ग्लैमर मेजर नारंग से विवाह करनेवाली हमेशा प्रमोशन की महत्वाकांक्षा रखनेवाली निरूपमा इस नाटक की प्रधान नारीपात्र है। जो अपने पति को फिर से युद्ध में भाग लेने के लिए प्रवृत्त उनके मृत्यु का स्वयम् कारण बनती है।

नाटक के शेष अन्य पात्रों में संतोष प्रख्यात लेखक है। वह निरूपमा का प्रेमी है। शबनम निरूपमा और मेजर नारंग की बेटी है। कर्नल नागांयच रिटायर्ड़ कर्नल है। हुजूरासिंह उनके घर का नौकर है। मीरा और सकीना उन दो सैनिक अंफसरों की विधवाएँ हैं, जिन्हें युद्ध के मोर्चेपर छोड़कर मेजर नारंग भाग आये थे। मीरा से ही निरूपमा को यह जानकारी मिलती है। जिससे निरूपमा नारंग की प्रताड़ना करती है। और मेजर नारंग भारत-पाक युद्ध में शहीद हो जाते हैं। इसप्रकार अन्य पात्रों की उपस्थिति से प्रधान पात्र मेजर नारंग और निरूपमा के चरित्र अधिक प्रभावशाली बने हैं। अतःइस नाटक की पात्र योजना में मेजर नारंग और निरूपमा की पात्र-प्रधानता दिखायी देती है।

महत्वाकांक्षी निरूपमा की प्रताड़ना मेजर नारंग को फिर से सैनिकी जीवन के आदर्श कीं ओर प्रवृत्त करती है। और भारत-पाक युद्ध में मेजर नारंग सैनिकी जीवन के आदर्शानुरूप लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त करते हैं। मेजर नारंग का यह प्रयास 'अँधेरे से रोशनी' की तरफ जाने का प्रयास है । इससे नायक 'अँधेरे का बेटा' होते हुए भी 'अँधेरे का सूरज' बनता है । और उनका यह प्रयत्न ठीक ही है क्योंकि आदमी मूलतः अँधेरे का बेटा ही होता है । इसीलिए नाटककार ने इस नाटक को अँधेरे का बेटा यह शीर्षक दिया है, जो प्रधान पात्र मेजर नारंग से संबंधित है । और इस 'अँधेरे के बेटे' को रोशनी की ओर प्रवृत्त करती है, इस नाटक की प्रधान पात्र - निरूपमा ।

इस प्रकार अँधेरे का बेटा इस नाटक में मेजर नारंग और निरूपमा की पात्र प्रधानता सभी दृष्टि से सार्थक बन गयी है ।

2.3 'न धर्म, न ईमान' [redacted] -

'रेवतीसरन शर्मा' के 'न धर्म, न ईमान' नाटक का प्रमुख पात्र दिनेश है । दिनेश प्रचलित धर्म से संबंधित विवाह पद्धति की मान्यता के विरूद्ध आवाज उठानेवाला नये विचारों का क्रांतिकारी युवक हैं । विवाह संबंध विषयक परंपरावादी और आधुनिक नवमतवादी विचारों की विजय होती हैं । इसी संदर्भ में सन 1970 में लिखा गया यह नाटक एक ऐसा नाटक हैं, जिस में एक पुरूष पात्र की प्रधानता हैं ।

प्रेम के सामने दूर से भाई-बहन के रिश्ते के बंधन और समान खून से उत्पन्न नस्ल की कमजोरी आदि बातों को दिनेश मानता नहीं है । साथ ही वह धर्मशास्त्र, रूढ़ि, प्रथा एवं परंपरागत बंधनों को न मानते हुए अपनी प्रेमिका दया के लिए अनेक दिनोंतक अविवाहित रहकर देवदास की तरह उसकी प्रतीक्षा करनेवाले और अंत में विवाहित दया काभी पत्नी के रूप में स्वीकार करनेवाले क्रांतिकारी युवक के रूप में इस नाटक में दिनेश की पात्र प्रधानता हैं ।

2.3.1 दिनेश -

'दिनेश' 'न धर्म, न ईमान' नाटक का प्रमुख पात्र है और वही इस नाटक का नायक भी है । उसके चरित्र की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

2.3.1.1 आदर्श प्रेमी ।

2.3.1.2 भावुक ।

2.3.1.3 भविष्य के सपने देखनेवाला ।

2.3.1.4 पुराने विचारों का विरोध ।

2.3.1.5 दृढ़ निश्चयी ।

2.3.1.6 दादी के बर्ताव से दुःखी ।

2.3.1.1 आदर्श प्रेमी -

इस नाटक का नायक दिनेश आदर्श प्रेमी हैं । वह प्यार में जाति - पाँति, रूढ़ी - परंपरा या खून के रिश्ते आदि बातों को महत्व न देकर मन से उठनेवाली प्रेम भावना को ही अधिक महत्त्व देता हैं । वह परंपरागत विवाह पद्धति पर आवाज उठानेवाला क्रांतिकारी युवक हैं । उसके घर में आश्रित युवा लड़की दया से वह प्यार करता है । और उससे शादी करना चाहता है । मगर दादी इस विवाह का विरोध करती है, क्योंकि दया दिनेश के दूर के रिश्ते से बहन लगती है । हिन्दू धर्म में बहन के साथ विवाह करना पाप माना जाता है ।

दादी, दया की शादी उसकी इच्छा के विरूद्ध अधेड़ उम्र के रामदयाल से करा देती है । दया की शादी के बाद दिनेश उदास रहने लगता हैं । दया के अलावा और किसी भी लड़की से शादी न करने की कसम लेकर घर छोड़कर चला जाता है । उसका कहना हैं कि विवाह उसी के साथ होना चाहिए जिसे पूरी तरह जाना-पहचाना हो और जिससे मुहब्बत हो । पत्नी के रूप में दया को चाहते हुए वह पिताजी से कहता है - ''जिसे देखा

है, परखा है - पूरीतरह जाना है - वही शादी के लिए सबसे मुनासिब है ।"[36] दादी जब दिनेश को कहती है कि दया छोड़ दे और किसी भी लड़की से शादी कर ले तब उसे कहता है - "कर लेता (अपने पर संयम करते हुए) अगर मुहब्बत हो जाती । लेकिन मेरा फैसला हो चुका है । मैं शादी करूँगा तो दया से करूँगा, वरना नहीं करूँगा ।"[37]

इस प्रकार दिनेश दया के अलावा और किसी भी लड़की से शादी न करने की कसम लेकर दया को अपना बनाने के लिए घर छोड़कर चला जाता हैं । दया की शादी होने के बाद भी वह दया को पहले जैसा ही प्यार करता है । दया के लिए जान तक कुर्बान कर देने को तैयार होता है । दया की बीमारी की अवस्था में उसे अपना खून देकर उसकी जान बचाता है । और अंत में संसार की सारे बंधनों और मर्यादाओं को तोड़कर विवाहित दया का भी पत्नी के रूप में स्वीकार करता हैं ।

2.3.1.2 भावुक -

दिनेश अत्याधिक भावुक प्रेमी है । दादी जब उन दोनों की शादी के लिए विरोध करती है, तब वह अत्याधिक दुःखी होता हैं । दया जब उससे जिंदगी में फिर कभी भी न मिलने की कसम लेती है, तब वह उसे हासिल करने के लिए घर छोड़कर चला जाता है । बीमारी की अवस्था में वह दया को दी हुयी कसम तोड़कर उसे मिलने आता है । लेकिन दया को यह बात अच्छी नहीं लगती क्यांकि दिनेश को मिलने के बाद उसकी पुरानी यादें ताजा हो जाती हैं । और वह अपने पर काबू नहीं पा सकती इसीलिए बीमारी की अवस्था में जब दिनेश उसे मिलने जाता है, तब वह दिनेश को वहाँ से चले जाने को कहती है । उसी वक्त दिनेश उसे कहता है -

"दिनेश - चला जाऊँगा ... लेकिन एक पल के लिए तो उस चेहरे को निहारने दो, जिससे कभी मैं अपनी दुनिया बसाने चला था ।

दया - (मुँह फेरकर और भावनाओं को पूरी तरह दबाकर) वह चेहरा मर गया है ! मिट गया है !

दिनेश - वह मरा नहीं है । वह मेरी आँखों के आकाश में बस गया हैं । हर शाम वह मेरी यादों के झुरमटों के पीछे

से चाँद की तरह निकलता है और रातभर मेरे ख्वाबों की खिड़की में अटका मुझे उन्हीं निगाहों से तकता रहता है ।" [38]

इस प्रकार दिनेश अत्याधिक भावुक दिखायी देता है ।

2.3.1.3 भविष्य के सपने देखना -

दिनेश उसके घर में आश्रित युवा लड़की दया से प्यार करता है और वह दया के साथ शादी करके मधुर जीवन बीताने के सपने देखता है - "दया, मैं तुम्हें अपने ख्वाबों के मखमल और प्यार के रेशम की आग़ोश में सँजोकर रखूँगा ! तुम्हारे अंग-अंग को मेरे चुम्बनों की गुलाबी पंखुड़ियों के नम होंठ सहलाएँगे । मेरी उंगलियाँ तुम्हारे बालों को ऐसे सहलाएँगी पत्तियों जैसे पतियों की पलकों को सुबह की ओस !" [39]

इस प्रकार दिनेश दया के साथ विवाह करके मधुर जीवन बीताने के सपने देखता है । मगर दादी के कारण उसके सपने टूटकर बिखर जातें हैं । दया दादी के साथ नमकहरामी नहीं करना चाहती इसलिए विवाह का विरोध नहीं करती । दादी दिनेश को ऊच्च तथा दया को नीच मानती हैं, साथ ही दया दिनेश को दूर के रिश्ते से बहन लगती है, इसलिए उन दोनों का विवाह नहीं करना चाहती । इसके संबंध में डा. वीणा गौतम लिखती हैं - "मध्यवर्ग में आज अनेको ऐसे उद्धरण मिल जायेंगे, जहाँ विवाह से पूर्व शिक्षित लड़के - लड़कियाँ परस्पर प्रेम करते हैं, लेकिन परिस्थितिवश अनेकाधिक कारणों से माता-पिता के विरोध, आर्थिक विषमता, जाँति-पाँति की संकीर्णता के कारण उनका विवाह अपने प्रेमी से नहीं हो पाता ।" [40]

इस प्रकार दादी के कारण दिनेश के सपने टूट जाते हैं ।

2.3.1.4 पुराने विचारों का विरोध -

दिनेश आधुनिक विचारोंवाला शिक्षित युवक है । वह दया से प्यार करता है और उससे शादी करना चाहता मगर दादी दया को दूर के रिश्ते से बहन मानती है इसलिए उन दोनों का विवाह नहीं करना चाहती । लेकिन दिनेश ऐसे औढ़ हुए रिश्तों को नहीं मानता । वह दादी को कहता है, दया मेरी बहन तब हो सकती - "जो

बाप के पराग से फूटती है, माँ की कोख से उगती हैं ।'' [41] रिश्तों की बहन नीम और शीशम के उन पेड़ों की तरह होती है जो पास-पास रहते हुए भी एक -दूसरे के भाई बहन नहीं होते । वह संसार के सारे बंधनों को तोड़कर दया को अपनाना चाहता है क्योंकि 'दो हृदयों के सम्मिलन से ही जीवन की यात्रा सुविधाजनक चल सकती ।'' [42]

दया को तपेदीक की बीमारी हुई है, मगर उसका पति रामदयाल और दादी अंधःविश्वास के कारण उसका इलाज करने की अलावा दया को इक्कीस दिन निर्जल व्रत रखने को कहती है । इसके संबंध में दादी रामदयाल से कहती है - ''अगले सोमवार से देवी का इक्कीस दिन का पाठ चलेगा । यह निर्जल व्रत रखेगी । तू रोज सुबह मुट्ठीभर बाजरा छत पर कबूतरों को डाल आया कर । जैसे-जैसे वे दाने चुगेंगे, इसका रोग तिल-तिल करके घटता जाएगा ।'' [43] इससे दया की बीमारी इतनी बढ़ती है कि वह खून की उल्टियाँ कर देती हैं, फिर भी दादी उसे अस्पताल में नहीं भेजना चाहती । तब दिनेश उसे अस्पताल में दाखल करके उसे अपना खून देकर उसकी जान बचाता हैं और संसार के सारे बंधनों को तोड़कर दया को पत्नी के रूप में स्वीकार करता हैं ।

इस प्रकार दिनेश पुराने विचारों का विरोध करता है ।

2.3.1.5 दृढ़ निश्चयी -

इस नाटक में दिनेश का दृढ़ निश्चयी रूप दिखाई देता हैं । चाची जब जान जाती है कि दया और दिनेश प्यार करते हैं और वे दोनों शादी करना चाहते हैं । तब चाची दिनेश को बताती है कि दादी इस शादी के लिए कभी भी नहीं तैयार होगी, तब दिनेश उसे कहता है - ''मैं, दया को अपनी बनाऊँगा । और आज के लिए नहीं, कल के लिए नहीं, जिंदगी की उस घड़ी तक के लिए, जब तक किसी को अपनी बनाए रखना अपने बस में होता हैं ।'' [44]

इस प्रकार दिनेश किसी भी हालत में दया को अपना बनाने की कसम लेता है ।

दादी, जब उन दोनों के विवाह का विरोध करती है, तब दिनेश दया के अलावा और किसी लड़की से शादी न करने की कसम लेकर दया को हासिल करने के लिए घर छोड़कर चला जाता है । जब चाची उसे

रूकने के लिए कहती है, तब दिनेश उसे कहता है जिस घर में मेरी मुहब्बत के लिए जगह नहीं है वह घर मेरा नहीं हो सकता । "मैं भाग नहीं रहा, चाची, आजाद हो रहा हूँ । मैं सारे बंधन तोड़कर दया को हासिल करूँगा ।" [45]

इस प्रकार दिनेश दया को हासिल करने के लिए घर छोड़कर चला जाता है । बीमारी की अवस्था में उसे अपना खून देकर उसकी जान बचाता है और अंत विवाहित दया का भी पत्नी के रूप में स्वीकार करता है ।

2.3.1.6 दादी के बर्ताव से दुःखी -

दादी दिनेश के पिताजी की सौतेली माँ है । उसका उस घर में पूरा अधिकार है । दिनेश को सगी माँ नहीं है तबसे दादी दिनेश को बहुत प्यार करती है । लेकिन वह जान जाती है कि दिनेश और दया एक दूसरे से प्यार करते हैं और वे दोनों शादी करना चाहते हैं, तब अत्याधिक क्रोधित होती है । दादी दिनेश और दया से नफ़रत करने लगती है । वह दिनेश से बात भी नहीं करती, इससे दिनशे अत्याधिक दुःखी होता है और पिताजी से कहता है -

" दिनेश - पिताजी, मुझे अपनी माँ कभी न याद आयी । पर अब बार-बार मैंने महसूस किया है कि बच्चों से उनकी माँ नही छिननी चाहिए । जब शाम होती है और मैं होता हूँ और कमरे में कोई यह कहनेवाला भी नहीं होता कि मैंने बत्ती क्यों नहीं जलाई, तब मुझे अपनी माँ याद आती हैं ।" [46]

इस प्रकार दिनेश दादी के इस बर्ताव से दुःखी होता है । आज तक उसने कभी भी यह न महसूस किया कि उसकी सगी माँ नहीं है, मगर अब बार - बार उसे अपनी माँ की याद आती है ।

गौण पात्र -

न धर्म, न ईमान इस नाटक की पात्र योजना में दिनेश की पात्र प्रधानता दिखायी देती है । इस नाटक में दिनेश, दया, दादी, रामदयाल, दिनेश के पिता, चाची, पंड़ीत और डाक्टर आदि पाँच पुरूष पात्र और तीन नारीपात्र कुल आठ पात्र हैं ।

नाटक के अन्य पात्रों में दादी, दिनेश के पिता की सौतेली माँ है । दिनेश के परिवार में दादी का घर में पूरा अधिकार है । परिवार के सभी लोग उसका आदर करते हैं । दादी परंपरावादी होने के कारण दिनेश और दया के विवाह का विरोध करती है । और अपनी इच्छा के अनुसार दया का विवाह अधेड़ उम्र के रामदयाल से करा देती है ।

दया, दिनेश की प्रेयसी है । दया जानती है कि दिनेश उसका दूर के रिश्ते का भाई है, फिर भी वह उससे प्रेम करती है । दया, दादी की कृपा से अपने पिता रामप्रसाद के साथ उनकी हवेली में आश्रित रूप में रहती है । दादी के उपकारों के बोझ के कारण वह दादी की इच्छा के लिए दिनेश से दूर रहकर अधेड़ उम्र के रामदयाल से शादी करती है । और अंत में दिनेश के पास आती है ।

रामदयाल, दया का पति है । वह अधेड़ उम्र का विधुर है । दया के प्रति उसे सहानुभूति नहीं है । दया के बीमार पड़ने पर उसका इलाज करने के अलावा उसके मरने की प्रतीक्षा करता है । दिनेश के पिता दादी के हाँ में हाँ मिलानेवाला व्यक्ति है । चाची, दिनेश का भला चाहनेवाली है । डाक्टर, दया की बीमारी का इलाज करनेवाला व्यक्ति है । इस प्रकार नाटक में अन्य सभी पात्रों की उपस्थिति है । अन्य पात्रों की यह उपस्थिति नाटक के प्रधान पात्र के चरित्र विकास की दृष्टि से महत्व की रही हैं ।

प्रेम के लिए धर्मशास्त्र, रूढ़ि-प्रथा, परंपरावाद और दूर के ओढ़े हुए भाई-बहन के रिश्ते न मानकर दिनेश, दया से प्रेम करता है । दया की शादी रामदयाल के साथ होने के बाद स्वयम् जिंदगीभर अविवाहित रहने का निर्णय लेकर देवदास की तरह उसकी प्रतीक्षा करता रहता है । बीमारी की अवस्था में अपना खून देकर तपेदीक की बीमारी से दया को बचाता है । और अंत में विवाहिता दया का पत्नी के रूप में स्वीकार करके उसे नया जीवन देने की प्रवृत्ति के कारण दिनेश के पात्र को इस नाटक के अन्य सभी पात्रों में प्रधानता प्राप्त हुयी है, जो सर्वथा सार्थक है । इस प्रकार नाटक की पात्र योजना में भी दिनेश की पात्र प्रधानता है ।

नाटक की शीर्षक योजना में भी दिनेश की पात्र प्रधानता है । नाटककार ने इस नाटक को 'न धर्म, न ईमान' यह शीर्षक दिया है । इस में मूलतः धर्म और ईमान ये दो शब्द है, और उन दोनों शब्दों के साथ न

उपसर्ग लगने से ' न धर्म, न ईमान' इस नाटक का शीर्षक बन गया हैं । और इससे अभिप्रेत होनेवाला अर्थ नाटक के प्रधान पात्र दिनेश से संबंधित है ।

शीर्षक में प्रयुक्त 'धर्म' शब्द का अर्थ आचरण है, ईमान शब्द का अर्थ प्रामाणिकता है । मनुष्य के जीवन में दोनों का महत्त्व होता हैं । भारतीय संस्कृति में पितृधर्म, मातृधर्म, गुरूधर्म, पुत्र धर्म, पति-धर्म और पत्नीधर्म आदि अनेक धर्मों का पालन किया जाता हैं । पति के साथ एकनिष्ट रहकर पतिव्रत्य का पालन करना पत्नी धर्म होता हैं । भारतीय स्त्री इस धर्म का पालन करना अपना सर्वस्व मानती है । इस नाटक की दया, रामदयाल की पत्नी है लेकिन वह अंतर्मन से दिनेश को चाहती है । और अंत में वह अपने पति को छोड़कर पत्नी धर्म का त्याग करके दिनेश के पास आती है ।

''वास्तव में विवाहिता दया का दिनेश के पास चला जाना अनैतिक है, उसे अपने पति के पास ही रहना चाहिए था ।''[47] दया का यह व्यवहार पत्नी धर्म के अनुरूप नहीं ।

मनुष्य के जीवन में धर्मपालन की तरह ईमान का भी विशेष महत्त्व है । ईमान अर्थात प्रामाणिकता ओर वफादारी इसके निर्वाह के लिए मनुष्य कुछ भी करता है इस नाटक की दया धर्म के साथ ईमान भी छोड़ देती है । उसका पति बेईमान था, इसलिए वह भी उसके साथ बेईमानी करके दिनेश के पास चली जाती है । इस प्रकार दया दया 'न धर्म' का पालन करती है 'न ईमान' का । इस प्रकार के व्यवहार का कारण केवल दिनेश ही है । [redacted] दादी के उपकारों के बोझ के कारण उसने विवाह तो रामदयाल से किया था लेकिन पति के रूप में वह दिनेश को ही चाहती है, इसलिए अंत में दिनेश को पाने के लिए वह धर्म और ईमान दोनों को छोड़ देती हैं । इसी बात को ध्यान में लेकर नाटककार ने इस नाटक को 'न धर्म, न ईमान' यह शीर्षक दिया है और इससे दिनेश का चरित्र अत्यंत संबंधित है । इस दृष्टि से नाटक की शीर्षक योजना में भी दिनेश की पात्र प्रधानता दिखाई देती है ।

इस प्रकार इस नाटक में दिनेश की पात्र प्रधानता सभी दृष्टियों से सर्वथा सार्थक बन गयी हैं ।

निष्कर्ष -

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि शर्माजी के 'चिराग़ की लौ' अँधेरे का बेटा और न धर्म, न ईमान आदर्शवादी नाटक हैं । वर्तमान कालीन समाज के भ्रष्ट एवं रिश्वतखोर प्रवृत्ति के लोगों के शिकंजे से दूर रहते हुए भी अपने नैतिकतावादी मूल्यों और सिद्धांतों का पालन करनेवाले इन्कमटैक्स इन्स्पेक्टर के रूप में चिराग़ की लौ में किशोर की पात्र प्रधानता दिखाई देती हैं ।

प्रस्तुत नाटक का नायक किशोर, आदर्शवादी, ईमानदार, कर्मठ, जनता के प्रति आस्था रखनेवाला, दायित्व का निर्वाह करनेवाला, बनावट और दिखावे से दूर रहनेवाला, अपने गैरों से मिलने के कारण आत्मपीड़ित तथा अँधेरे के सीने में दागती हुई चिराग़ की लौ है । जयंत, गिरीश तथा रानी तारा को बहकाते हैं और उसे रिश्वत लेने को प्रवृत्त करके किशोर के ईमानदारी को मिटाना चाहते हैं, मगर किशोर के ईमानदारी की लौ इतनी कच्ची नहीं थी कि जो ऐसे हवा के झोंके से बुझे । वह तो तूफान में भी न मिटनेवाली थी । जब तारा रिश्वत लेकर उसके ईमानदारी को कलंक लगाती है तब वह अपनी धनलोभी पत्नी का साथ छोड़ देता है, मगर मूल्यों सिद्धांत और ईमानदारी को नहीं छोड़ता । इसके अलावा सशक्त चरित्र की दृष्टि से तारा, रानी, जयंत, गिरीश और नसीम का चरित्र महत्त्वपूर्ण है ।

अँधेरे का बेटा नाटक में मेजर नारंग मिलिट्री ऑफ़िसर होकर भी सामान्य आदमी की तरह जीने का प्रयास करते हैं, असलियत छिपाने का प्रयास करते हैं, जो डरपोक है, जिन्हें अपनी गलती का एहसास होता है, पत्नी के कारण जिनका जीना मुश्किल हो जाता है और अंत में अपने को लगा हुआ कलंक धो डालने के लिए देश के लिए वीरगति प्राप्त करने पर गौरव का पात्र बननेवाले सैनिक के रूप में मेजर नारंग की पात्र प्रधानता सार्थक सिद्ध हुई है ।

पति के रूप में मिलिट्री ऑफ़िसर का चाह रखनेवाली,उनकी बहादूरी पर नाज करनेवाली, उनका सुपरसेशन होने पर हौसला बढ़ाने का प्रयास करनेवाली, पति की अपेक्षा उसके प्रमोशन को अधिक चाहनेवाली तथा अंत में देश के लिए वीरगति प्राप्त करनेपर गर्व महसूस करनेवाली पत्नी के रूप में निरूपमा की पात्र प्रधानता

सार्थक सिद्ध हुई है । गौण पात्र के रूप में संतोष, शबनम, सकीना, मीरा, कर्नल नगायंच तथा हूजूरासिंह का चरित्र महत्त्वपूर्ण हैं ।

न धर्म, न ईमान शर्माजी का प्रेम-विवाह विषयक समस्या को लेकर लिखा गया नाटक है । प्रस्तुत नाटक का नायक दिनेश प्रचलित धर्म से संबंधित विवाह पद्धति की मान्यतापर विश्वास रखकर, उसके विरूद्ध आवाज उठानेवाला क्रांतिकारी युवक है ।

दिनेश आदर्श, भावुक, भविष्य के सपने देखनेवाला,पुराने विचारों का विरोध करनेवाला, दृढ़ निश्चयी तथा दादी के बर्ताव से दुःखी होनेवाला आदर्श और सच्चा प्रेमी के रूप में दिनेश की पात्र - प्रधानता सार्थक सिद्ध हुई हैं ।

प्रेम के सामने दूर से भाई-बहन के रिश्ते के बंधन को, समान खून से उत्पन्न नस्ल की कमजोरी को और धर्मशास्त्र रूढ़ी प्रथा एवं परंपरागत बंधनों को महत्त्व न देते हुए अपनी प्रेमिका दया के लिए अनेक दिनोंतक अविवाहित रहकर देवदास की तरह उसकी प्रतीक्षा करनेवाले, बीमारी की अवस्था में उसे अपना खून देकर उसकी जान बचानेवाले और विवाहित दया का भी पत्नी के रूप में स्वीकार करनेवाले क्रांतिकारी युवक के रूप में दिनेश का चरित्र अन्य सभी पात्रों में सभी दृष्टियों से सर्वथा सार्थक है । गौण पात्र के रूप में दया, दादी, चाची, रामदयाल, दिनेश के पिता पंड़ीत और डाक्टर का चरित्र महत्त्वपूर्ण है ।

संदर्भ सूची -

1.	डा. जगदीशचंद्र माथूर	पहला राजा	पृष्ठ 5-6
2.	डा. श्याम शर्मा	आधुनिक हिंदी नाटकों में नायक	पृ. 174
3.	डा. रेवतीसरन शर्मा	चिराग़ की लौ	पृ. 31
4.	वही	वही	पृ. 53
5.	वही	वही	पृ.49
6.	वही	वही	पृ.32

7.	वही	वही	पृ.30
8.	वही	वही	पृ.11
9.	वही	वही	पृ.16
10.	वही	वही	पृ.16
11.	वही	वही	पृ.83
12.	वही	वही	पृ.85
13.	वही	वही	पृ.86
14.	वही	वही	पृ.32
15.	वही	वही	पृ.70
16.	वही	वही	पृ.84
17.	वही	वही	पृ.36
18.	वही	वही	पृ.39
19.	वही	वही	पृ.58
20.	वही	वही	पृ.13
21.	वही	वही	पृ.14
22.	वही	वही	पृ.57
23.	वही	वही	पृ.30
24.	वही	वही	पृ. 74-75
25.	रेवतीसरन शर्मा	अँधेरे का बेटा	पृ. 70
26.	वही	वही	पृ. 72
27.	वही	वही	पृ. 40
28.	वही	वही	पृ. 97
29.	वही	वही	पृ. 30
30.	वही	वही	पृ. 16

31.	वही	वही	पृष्ठ वही
32.	वही	वही	पृ. 43
33.	वही	वही	पृ.44
34.	वही	वही	पृ.74
35.	वही	वही	पृ.101
36.	डा. रेवतीसरन शर्मा	न धर्म, न ईमान	पृ. 11
37.	वही	वही	पृ. 16
38.	वही	वही	पृ.83
39.	वही	वही	पृ. 06
40.	डा. वीणा गौतम	आधुनिक हिंदी नाटकों में मध्यवर्गीय चेतना	पृ. 86
41.	डा. रेवतीसरन शर्मा	न धर्म, न ईमान	पृ. 15
42.	अगस्त्य	रामेश्वरलाल दुबे	पृ. 7
43.	डा. रेवतीसरन शर्मा	न धर्म, न ईमान	पृ. 42
44.	वही	वही	पृ. 8
45.	वही	वही	पृ. 18
46.	वही	वही	पृ. 62
47.	डा. गजानन सूर्वे	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटकों का सांस्कृतिक अध्ययन	पृ. 383